भारत सरकार

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं.1041

जिसका उत्तर 08.02.2024 को दिया जाना है

उत्तर -पूर्वी क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्गों की हालत

1041. श्री प्रद्युत बोरदोलोई:

क्या सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार को ज्ञात है कि उत्तर-पूर्वी राज्यों के राजमार्ग, विशेषकर एनएच-15, एनएच-37 और एनएच-39 खराब रखरखाव और बड़ी संख्या में गड्ढों के कारण अत्यंत चिंताजनक स्थिति में है और यदि हां, तो इन राजमार्गों के रखरखाव कार्यों और उनके लिए आबंटित निधि का ब्यौरा क्या है तथा यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं;

(ख) क्या यह तथ्य सरकार के संज्ञान में है कि उत्तर-पूर्वी क्षेत्र की विशिष्ट जलवायु परिस्थितियों और स्थलाकृति के कारण राष्ट्रीय राजमार्गों के संचालन, सुरक्षा और रखरखाव में अद्वितीय चुनौतियां आती हैं; और

(ग) यदि हां, तो सरकार द्वारा इस क्षेत्र-विशिष्ट रखरखाव समस्याओं का समाधान करने के लिए कौन से समुचित कदम उठाए गए हैं या उठाए जाने की संभावना है और यदि नहीं, तो इसके क्या कारण हैं?

उत्तर

सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री

(श्री नितिन जयराम गडकरी)

(क) राष्ट्रीय राजमार्गों (रारा) पर धुरी (ऐक्सल) भार और जलवायु प्रभावों के कारण समय-समय पर क्षति होती है। भारी बारिश, बाढ़, भूस्खलन, भूकंप आदि जैसी प्राकृतिक आपदाओं के कारण भी रारा को नुकसान होता है।राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास और रखरखाव/मरम्मत एक सतत कार्यकलाप है जिसमें मरम्मत,गड्ढे और फुटपाथ को हुई अन्य क्षति को ठीक करना शामिल है। पिछले तीन वर्षों के दौरान पूर्वोत्तर राज्यों में राष्ट्रीय राजमार्गों के रखरखाव और मरम्मत पर 1552 करोड़ रुपये का व्यय किया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि राष्ट्रीय राजमार्गों का कोई भी खंड सड़क को यातायात योग्य स्थिति में बनाए रखने के लिए ठेकेदार के बिना न रहे, मंत्रालय ने चालू वित्तीय वर्ष से कार्य निष्पादन आधारित रखरखाव अनुबंध (पीबीएमसी) और अल्पकालिक रखरखाव अनुबंध (एसटीएमसी) शुरू किया है।

(ख) और (ग) उत्तर पूर्वी क्षेत्र सहित रारा के किसी भी खंड का विकास, रखरखाव और सुरक्षा प्रावधान प्रासंगिक भारतीय सड़क कांग्रेस मानकों/दिशानिर्देशों और सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय के नीति दिशानिर्देशों के अनुसार डिजाइन किए जाते हैं। उत्तर पूर्वी (एनई) क्षेत्र में लंबे बरसात के मौसम, नाजुक पहाड़ी ढलानों आदि को ध्यान में रखते हुए, स्लो सुरक्षा उपायों, जल निकासी आदि का विशेष ध्यान रखा जाता है।

*****